उनके कदम यहाँ... निगाहें वहाँ...

जैसे-जैसे जनवरी मास का आगाज़ होता है, तो कइयों के मानस पटल पर उस त्याग और तपस्वीमूर्त की छवि फिल्म के रील की तरह घूमने लगती है। वो महान पुरुष जिन्होंने अपने जीवन से वो कर दिखाया, जिसकी वजह से वे समस्त मानव जाति के लिए उत्कृष्ट व सुकून भरी ज़िन्दगी के राहगीर बन गए। अथवा यूँ कहें तो भी अतिश्योक्ति नहीं होगी, कि सारी मानव जाति के लिए वे ऐसा उदाहरण बने जिनके त्यागमय जीवन की नींव बहुत गहरी व हरेक के दिल पर छाप छोड़ने वाली रही। उनके जीवन के कई स्नेह संस्मरण व खुशियों भरी स्मृतियाँ, वो पवित्र पालना की झलकियाँ मानस पटल पर आये बिना नहीं रहतीं। हाँ, हम ऐसी महान विभूति प्रजापिता ब्रह्मा, जो कि ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक रहे, उनकी बात कर रहे हैं। वे सारे मानव मात्र के साथ हृदय से जुड़ गये। उनके हृदय की विशालता हर बाधाएँ, परिस्थितियाँ, जाति, रंग, देश-प्रदेश से तिरोहित करती हुई हरेक के दिल को छूने वाली रही। ये सारी चीज़ें जैसे उनके व्यक्तित्व के सामने बौनी सी रह गईं।

- ब्र.कु. गंगाधर

सोचने की बात ये है कि ऐसी असाधारण विभूति ने अपने जीवन को जीने के मापदण्ड को किस प्रकार नियमों की परिधि में बांधा होगा, ये कल्पना से भी परे है। फिर भी यहाँ जो हमने समझा वो आपके सामने रख रहे हैं...।

प्रजापिता ब्रह्मा ने एक संकल्प लिया कि इस सारे विश्व से दु:ख, अशांति का नामोनिशान मिट जाये। साथ-साथ समझा कि उसके लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी व त्याग पहले स्वयं मुझे करना होगा। कहते हैं परमात्मा को जब सृष्टि रचने का ख्याल आया, तो उन्होंने इस शुभ कार्य के लिए प्रजापिता ब्रह्मा को ही चुना। उन्हें ही श्रेष्ठ व सुंदर दुनिया बनाने का जिम्मा दिया। बस उसी क्षण प्रजापिता ब्रह्मा ने देह सहित हर समय, श्वास, संकल्प को प्रभु अमानत समझ इस कार्य में स्वयं को सम्पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। उन्होंने स्वयं को सिर्फ ट्रस्टी समझा। ट्रस्टी माना ही मेरा कुछ भी नहीं। ये अमानत है, और इस अमानत में खयानत ना पड़े, इस बात का मुझे ख्याल रखना, ये चरितार्थ करके बताया ब्रह्मा बाबा ने। ज़रा सोचिये, शरीर में रहते हुए इसके भान से परे रहना कितना कठिन है, लेकिन उनके जीवन से सदा हमने देखा कि वे वैसे ही थे। बिल्कुल ट्रस्टी की तरह अपने शरीर में रहे और अपना सर्वस्व विश्व कल्याण में लगाया।

शरीर में रहते ट्रस्टी बनना माना शरीर के भान से ऊपर उठकर रहना। मानो हम विचार करें कि शरीर की सारी कर्मेन्द्रियाँ जो कि अपने तरफ आकर्षित करती हैं, उससे भी परे रहना। जैसे आँख, कहते हैं आँख ऐसी कर्मेन्द्री है शरीर की, जिससे जीवन की 80 प्रतिशत ऊर्जा खर्च होती है। आँखें धोखा भी दे सकतीं और आँखें दूसरों को राहत भी दे सकती हैं। जैसे कोई सन्यासी सन्यास करके घर से बाहर चला जाता है। यदि वो वापस आ जाये तो उसको क्या कहेंगे? सन्यासी तो नहीं कहेंगे ना! बाबा ने एक बार विश्व कल्याणार्थ अपना सम्पूर्ण समर्पित कर दिया, तो फिर पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। इस त्याग की नींव ने ही उन्हें समस्त मानव जाति का हृदय सम्राट बना दिया। बाबा ने सुबह उठने से रात को सोने तक मनुष्य का जीवन कैसा हो, और कैसे परफेक्ट हो, वो ना सिर्फ बताया बल्कि करके दिखाया। जैसे कि खाना खायें तो कैसे! बाबा हमेशा परमात्मा की याद में और शांति से भोजन करते थे, बीच में बात नहीं करते थे। वे चलते थे, तो भी बड़ी शालीनता से। वे किसी से बात भी करते, तो हद से ऊपर उठकर। उनकी भावना सबके प्रति इतनी उच्च और शुभ थी, कि जो भी उनके सानिध्य में आता, वो

- शेष पेज 4 पर...

ड्रामा की नॉलेज व्यर्थ चिंतन, परचिंतन से फ्री कर देती है

ड्रामा में हर सीन न्यारी है, सेम नहीं है, इसलिए ड्रामा की नॉलेज ने व्यर्थ चिंतन, परचिंतन से फ्री कर दिया है। यह क्यों हुआ? क्या हुआ? ड्रामा। मैंने देखा है सवेरे से रात्रि तक कराने वाले को जो कराना है, करा ही रहा है, वो बहुत होशियार है। कराने वाला करा रहा है, यह मैं सिर्फ शब्द नहीं कहती हूँ परन्तु बड़ा वन्डर लगता है। कैसे करा रहा है! हम करने वाले अचल अडोल रूहानी तख्त पर साक्षी हो करके प्ले कर रहे हैं। ऐसे नहीं सिर्फ बैठ जाते हैं, पार्ट प्ले कर रहे हैं आर्ट के रूप में। ड्रामा की नॉलेज से बाबा को साथी बनाया है, ड्रामा की नॉलेज से अचल अडोल रहने का नैचुरल नेचर बन जाता है, तो कोई भी बात हो वो बड़ी नहीं लगती है। साक्षी होकर देखें तो बहुत अच्छा है। हमारी यह गॉडली स्टूडेंट लाइफ बहुत अच्छी है। मैं भी सौ साल से ऊपर की हो गई हूँ, अब भी स्टूडेंट लाइफ है, माना सारी लाइफ ही स्टडी में सफल हो रही है। मैं कभी टायर्ड नहीं हुई तो रिटायर्ड क्यों होंगी! सेवाधारी के हिसाब से पहले त्यागी फिर तपस्वी फिर सेवाधारी यह तीनों ही साथ-साथ हो। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है। हिम्मते बच्चे मददे बाप, नियत साफ मुराद हासिल। याद से याद मिलती है, क्योंकि सच्ची दिल की याद में कोई फरियाद नहीं होती है। यह याद समय अनुसार दुश्मन को भी मित्र बनाने वाली है। सारे संसार में हमारा कोई दुश्मन नहीं है। सभी मित्र हैं। तो हरेक दिल से पूछे मैं कौन हूँ, मेरा कौन है! जब मैं आत्मा हूँ तो देह से न्यारा हूँ। तो बाबा कहता है हे आत्मा! तुम मेरी सन्तान हो, परंतु बचपन के दिन भुला न देना। हरेक को बहन भाई की दृष्टि से देखो, यह बहन भाई का सम्बन्ध भी संगमयुग पर कितना फायदे वाला है। एक दो को देख कितनी खुशी होती है। तो हम सबकी स्टूडेंट लाइफ है, भले कोई की उम्र साठ से ऊपर हो या कोई उम्र में छोटा हो, पर वो भी स्टूडेंट, वो भी स्टूडेंट। साक्षी होकर देखते हैं, हमारा आपस में स्टूडेंट लाइफ में सम्बन्ध बहुत अच्छा है। बैठके आपस में रूहरूहान करते हैं। रूहरूहान में ज्ञान की गहराई में जाते हैं। जितना गहराई में जाते हैं तो लगता है बाबा को ज्ञानी तू आत्मा प्रिय लगती है। यह देह के सम्बन्ध से न्यारा बनाने वाली नॉलेज है। तो संगमयुग पर कोई-कोई बातें इतनी अच्छी लगती हैं जो जीवन यात्रा में कदम-कदम पर कमाई करा रही हैं। समय की पहचान माना स्वयं की पहचान। अभिमान नहीं है, देही-अभिमानी की स्थिति से सहजयोगी हैं।

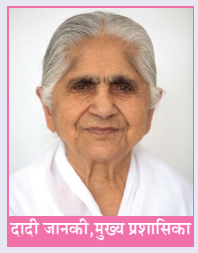
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

ब्रह्माबाबा के देह नहीं, गुणों से संबंध

ब्रह्माबाबा के हर कर्त्तव्य से हमारा प्यार है। हम बाबा का चित्र इसीलिए रखते हैं क्योंकि इस चित्र द्वारा ही विचित्र हमको मिला। ब्रह्माबाबा का कभी भी हम चित्र देखते हैं तो हमारा अटेंशन ब्रह्माबाबा के तन में नहीं जाता, लेकिन ये किसका माध्यम है – उस तरफ हमारी बुद्धि जाती है। कोई दूसरे लोगों के मुआफिक मूर्ति पूजा के रीति से हम ब्रह्माबाबा का चित्र नहीं रखते हैं। लेकिन ब्रह्माबाबा का चित्र बाबा के कमरे में इसीलिए रखते हैं कि हमको इस तन द्वारा शिवबाबा की नॉलेज मिली है तो उसकी स्मृति आती है। शिवबाबा ने हमको क्या से क्या बना दिया! तो चित्र हम नहीं देखते लेकिन चित्र द्वारा विचित्र को देखते हैं। बाबा के चित्र के सामने भी कोई क्वेश्चन वा समस्या ले करके जाता है तो उसे उसका उत्तर मिलता है। तो ब्रह्माबाबा के माध्यम द्वारा शिवबाबा आपको उत्तर देता है और अनुभव होता है जैसे सचमुच बाबा हमारे से बोल रहा है। क्योंकि हमारी भावना ही वह है कि शिवबाबा हमसे ब्रह्मा बाबा द्वारा मिल रहा है। तो बाबा हमको भावना का फल ब्रह्माबाबा द्वारा देता है। माध्यम को जानना तो पड़ेगा ना। इसीलिए हमारा ब्रह्मा बाबा से भी इतना ही प्यार है और शिवबाबा से भी इतना ही प्यार है। ब्रह्मा की आत्मा से हमारा कई जन्मों का कनेक्शन है। स्वर्ग में राज्य भी ब्रह्माबाबा के साथ करेंगे। तो आदि आत्मा होने के नाते से और जगतपिता होने के नाते से, साकार ब्रह्मा साकार सृष्टि का पिता है और इस आत्मा के साथ हमारे कई जन्मों का कनेक्शन है, उस नॉलेज से हम ब्रह्माबाबा को देखते हैं। बाकी शरीर की रीति से सोल कॉन्शियस हुए बिना बाबा के कमरे में आप बैठो तो आपको कुछ भी अनुभव नहीं होगा। जब हम अपनी ही बॉडी को भूलने की कोशिश करते हैं तो ब्रह्मा बाबा की बॉडी को क्यों देखें! तो हमारा देह के साथ नहीं, लेकिन ब्रह्माबाबा के कर्त्तव्य, विशेषता, गुण, शक्तियों के साथ सम्बन्ध हैं, इसीलिए हमको अनुभव होता है। कोई कमज़ोरी होगी तो ऐसे अनुभव करेंगे जैसे लाइट माइट की किरणों से बाबा हमको शक्ति दे रहा है व हमारी कमज़ोरी मिटती जा रही है। साथ ही यह भी अनुभव होता है कि अव्यक्त रूप में ब्रह्माबाबा बहुत पालना दे रहे हैं। ऐसा अनुभव करा रहे हैं जैसे साकार में पालना दे रहे हैं। तो इस अनुभव को बढ़ाओ और मुरली को मनन करो। कई कहते हैं हमको मनन करने का टाइम ही नहीं मिलता। लेकिन कई काम ऐसे होते हैं, जैसे आप नहा रहे हो, कपड़े धुलाई कर रहे हो, खाना बना रहे हो, तो उस समय उसमें फुल बुद्धि लगाने की तो बात ही नहीं है। ऐसे ऐसे टाइम पर आप मनन कर सकते हो। हाँ कोई कोई का काम होता है फुल दिमाग लगाने का, तो वह भी कितना, 8 घण्टा। 8 घण्टा जॉब करो, 8 घण्टा आराम करो, फिर जो समय बचता है उसमें सेवाकेन्द्र की सेवा करो, ज्ञान-योग सिखलाओ। उसमें भी आपकी कमाई है।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

ईगो की समाप्ति के लिए विशेषता देखें...

श्रेष्ठ कर्म के लिए सबसे पहले चाहिए दैवी गुणों की धारणा। दैवी गुणों की धारणा में कमी आने का मूल कारण है ईगो(अहंकार)। अनुभव कहता है, ज्ञान बहुत सुन लो, योग बहुत अच्छा लगाओ, बाबा को प्यार करो, परन्तु अगर अन्दर में ईगो है, तो वह सब बातों को ढ़क देगा, नुकसान कर देगा। सबसे पहले हमने देखा कि पिताश्री, जिनके पास इतनी अथॉरिटी थी, इतना हम बच्चों के लिए मेहनत करते समझाते लेकिन हमने कभी उनके व्यवहार में ईगो नहीं देखा। ईगो अभिमान पैदा करता, ईर्ष्या पैदा करता, क्योंकि देह अभिमान से ईगो आता है। हमें कभी ईगो न आये, इसकी अनेक युक्तियाँ बाबा ने बताई हैं। पहले तो हमारी बुद्धि में रहता कि इस ज्ञान की पढ़ाई में मैं सदैव स्टूडेन्ट हूँ। दूसरे सब समझते हम सब स्टूडेन्ट पढ़ाई पढ़ रहे हैं। मैं होशियार हूँ यह मैं कभी नहीं सोचती। मेरे से बहुत होशियार हैं। जितना जो होशियार है, मुझे उनसे सीखना है। हर एक, कोई किसमें कोई किसमें होशियार है, मुझे हर एक से स्टूडेन्ट बन गुण ग्रहण करने हैं, स्टडी करनी है, इतना होशियार होना है, चाहे कोई छोटा काम करता, चाहे कोई बड़ा करता है। चाहे कोई भाषण करता, चाहे कोई कर्मणा सेवा करता, लेकिन वह कितना उस बात में परफेक्ट है, मुझे उसकी परफेक्शन अपने में लानी है। जब मैं बुद्धि में रखती कि हर बात में मुझे परफेक्ट होना है तो कौन किस बात में परफेक्ट है, वह मुझे देखना है। ऐसा नहीं सोचती कि यह ऐसा है, वैसा है। मैं होशियार हूँ या मैं यह नहीं सोचती मैं दादी हूँ। हम सदैव स्टूडेन्ट हैं। कोई का कैसा भी व्यवहार है, चलन है, दृष्टि-वृत्ति है, हमें उनसे सीखना है। बाप शिक्षक है, पर हम हर एक से शिक्षा लें तो हमारी दृष्टि ऐसी रहती जिससे न खुद में ईगो आता, न कभी किसी बात के लिए नफरत आती है। यह भी फाइन है, गुड है। इनसे यह अच्छाई लेनी है, बुराई नहीं लेनी है। ईगो बुराई पैदा करता है। बाबा कहते कभी किसी को बुरे भाव से नहीं देखो। बुराई सबमें है, तुम बुराई नहीं देखो, अच्छाई देखो। न बुराई को बुद्धि में लाओ। बुद्धि में बुराई आने से चिन्तन चलेगा। चिन्तन चलने से दृष्टि जायेगी, फिर वैसा व्यवहार होगा फिर अन्दर का प्यार टूट जायेगा। लेकिन यदि उसके लिए सद्भावना है तो उसमें जो भी शुभ है वह लेना है अशुभ नहीं। तो यह नॉलेज अथवा योग हमको श्रेष्ठता, अच्छाई वा ऊँचाई लेना सिखाता है। श्रेष्ठता लेना ही गॉडली स्टूडेंट बनना है। सिर्फ कोर्स पूरा किया माना मैं स्टूडेंट हूँ। छोटे वा बड़े जिसमें जो विशेषता है वह लेना–इसका ही नाम है गॉडली स्टूडेन्ट। बाबा गुणों का भण्डार है। परन्तु देवतायें भी सर्वगुण सम्पन्न हैं। हमें बाप समान बनना है तो हमें इतने गुण धारण करने हैं, सभ्यता से चलना है-यह भी बहुत बड़ा गुण है। सभ्यता वाले मधुर बोलेंगे, धीरे चलेंगे। काम करेंगे तो बहुत प्यार से, देखेंगे तो भी सम्मान से। सभ्यता लव सिखाती, रिस्पेक्ट देना सिखाती, मधुरता सिखाती है। हर बात में सभ्यता की दरकार है। यह श्रेष्ठ मैनर्स हैं। सभ्यता वाले के पास ईगो नहीं आता है।

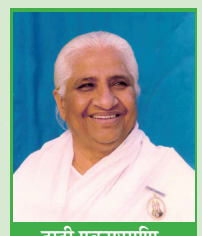
दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका